28 नवंबर कए श्रीपांच महाराजा डॉ सर कामेश्वर सिंह क 101म जयंती पर *विशेष*

समाद

मैथिली मे पहिल इ-पेपर

- पटना, 28 नवंबर,2008
- साप्ताहिक
- अंक- 18
- साल-1
- इनटरनेट संस्करण

> भारत लोकतंत्रक दुहारि पर अछि। एहन मे हम जमींदार लोकनि कए जमींदारी छोड़ि उद्योग दिस ध्यान लगेबाक चाही
>
> **कामेश्वर सिंह**
>
> 1932 मे देल भाषणक अंश

दरभंगा स्थित लक्ष्मीविलास पैलेसक (वर्तमान मे संस्कृत विश्वविद्यालय) दरबार हॉल मे गद्दी पर बैसल श्रीपांच महाराजाधिराज डॉ सर कामेश्वर सिंह।

हम सब बिसरि गेलहु महाराज !

लगभग 22 फुट ऊंच इटेलियन मारवलक विशाल मूर्तिक तौर मे बैसल हमरा लेल ई चौरंगी कोलकाताक चौरंगी स कम महत्वपूर्ण नहि अछि। कारण अछि जे हम ओ खंडहर देखि कए महलक इतिहास तकबाक प्रयास करबा लेल आइल छी, जे पिछला पांच दशक पूर्व बिहार कए सबस पैघ नियोक्ताक घर छल। 14 टा कंपनीक मालिक महाराजा डॉ सर कामेश्वर सिंहक धरती आइ देशक सबस पैघ याचक बनि चुकल अछि। नौकरी देब त दूर, नौकरी करबा लेल दर-दर भटकि रहल छी। आइ बिहार खास कए मिथिलाक लोक आन ठाम जा कए नौकरी करबा लेल मजबूर अछि, मुदा पांच दशक पूर्व एहि दरभंगा मे भारते नहि, अपितु ऑस्ट्रेलिया आ न्यूजीलैंड तक स लोक नौकरी करबा लेल अबैत छल। इ कोनो मिथिला या मगधक इतिहास नहि छी, बहुत गोटे एहन छथि जे चाहला पर एकर स्मरण करि सकैत छथि। लोहट, सकरी, रैयाम, अशोक पेपर मिल, जूट मिल की नहि छल हमरा लग। के नहि अबैत छल एहि ठाम नौकरी करबा लेल। स्थानीय कि देश-विदेशक लोक एहि ठाम काज करैत छल। दरभंगा एविएशन मे त हवाई जहाज उड़ेबा मे विदेशी पायलट क प्रभुत्व छल। डेनवी सन मैनेजर दरभंगा शहर कए जे रूप प्रदान केलक से आइ धरि कायम अछि। 1962 मे महाराजक निधन क बादो बिहारी हेब लाजक नहि, गर्वक विषय छल। मुदा धीरे-धीरे नौकरीक पाछु भगैत-भगैत हमर मनोबल ऐ क खसि गेल जे आइ सब किछु बिसरि गेलहुं। आइ हमरा लग महाराज सन एकोटा नियोक्ता नहि अछि। 14 टा त छोड़ू चारि टा कंपनीक मालिक देखबा मे नहि अबैत अछि। मालिक शब्द अपना लेल सपना बनि गेल। सच पूछल जाए त आइ हम बिहारी एहन याचक भ चुकल छी, जे नियोक्ताक संबंध मे बस एतबा कहि सकैत छी, हम सब बिसरि गेलहुं महाराज...।

बिहारक सबस पैघ उद्योगपति लग छल 14 टा कंपनी

संविधानसभाक सदस्य, जे बनेलक भारतीय संविधान

संविधानक निर्माता, सबस छोट सांसद

दरभंगाक महाराज डॉ सर कामेश्वर सिंह भारतक सबस छोट सांसद छथि। कामेश्वर सिंह जखन मात्र 24 सालक रहथि तखने हुनकर चुनाव सांसदक रूप मे भेल। ओ तीन बेर नोमिनेट भेलाह आ बाकी बेर चुनल गेलाह। ओ भारतीय इतिहास मे अनेक कारण स उल्लेखित भ सकैत छथि। दरभंगाक महाराज डॉ सर कामेश्वर सिंह 24 साल मे सांसद बनलाक बाद निधन तक संसदक सदस्य छलाह। ई दुर्भाग्य रहल जे हुनकर राजकीय सम्मानक संग अंतिम संस्कार नहि भ सकल। एहि प्रकारे दरभंगाक महाराज डॉ सर कामेश्वर सिंह सबस कम बैस मे संसद मे गेलाक बाद अपन आखरी सांस तक संसद सदस्य रहबाक एकटा रिकार्ड बना चुकल छथि। दरभंगा स 1952 मे लोकसभा चुनाव हारबाक बादो कामेश्वर सिंह क क्षेत्र मे दब-दबा एहन छल जे कांग्रेसक कद्दावर नेता ललितनारायण मिश्र तक हुनकर मदद स अपन राजनीतिक भविष्य तय केने छलाह।

राजनीति रूप स समृद्ध मानसिकताक परिचय दैत इंग्लैंड मे आयोजित गोल मेज सम्मेलन मे महाराजक इ घोषणा जे

आर्थिक मदद द मजबूत करबा मे योगदान देलाह, महाराजक कृपा वामपंथी दल पर सेहो रहल। भाकपा कए देल दस हजार टकाक प्रमाण उपलब्ध अछि। इ सबूत अछि जे महाराज एकटा राजा या जमींदार स बेसी एकटा उद्यमीक नजरि रखैत सबहक मांग कए पूरा करबाक हर संभव प्रयास करैत छलाह। इ अलग गप अछि जे एक सौ एक सालक बादो दरभंगा सहित पूरा देश हुनका एकटा उद्यमी आ राजनेता स बेसी महाराजक रूप मे संबोधित करि रहल अछि।

भारतीय संविधानसभाक सदस्य महाराज डॉ सर कामेश्वर सिंह क नाम स एकटा अद्‌भुत इतिहास जुड़ल अछि। आइ भारतीय संविधान मे 90 स बेसी संशोधन भ चुकल अछि, मुदा इ ककरो स्मरण नहि रहैत अछि, जे पहिल संविधान संशोधन दरभंगाक महाराज डॉ सर कामेश्वर सिंह कए कारण भेल अछि। जमींदारी पर महाराजक दावाक बाद जमींदारी उन्मूलनक कानून मे संशोधन करि तत्कालीन प्रधानमंत्री पं जवाहरलाल नेहरू दरभंगाक महाराज डॉ सर कामेश्वर सिंह स जमींदारी लेबा मे सफल भ गेलाह।

दरभंगाक महाराज डॉ सर कामेश्वर सिंह 24 साल मे सांसद बनलाक बाद निधन तक संसदक सदस्य छलाह। ई दुर्भाग्य रहल जे हुनकर राजकीय सम्मानक संग अंतिम संस्कार

महारानीक आओर दिल्लीक दरभंगा हाउस मे लाड माउंड बेटनक संग महाराज कामेश्वर सिंह।

भारतक भविष्य मात्र ओकर आजादी आ लोकतंत्र मे अछि, गांधी तक कए इ कहबा लेल मजबूर करि देने अछि जे दरभंगाक महाराज डॉ सर कामेश्वर सिंह हुनकर पुत्रक जेका छथि। गांधीक इ स्नेह संभवतः भारतक कोनो नेता या राजा कए नहि भेटल अछि। महाराज विधिवत कांग्रेसक सदस्य कहियो नहि भेलाह, मुदा कांग्रेसक लेल हुनक ‘दान’ इतिहासक पन्ना मे दर्ज अछि। कहल जाइत अछि जे कांग्रेस लेल दान मंगबा लेल गांधी एक बेर महाराज लग पहुंलाह। महाराज काफी इंतजारक बाद गांधी स भेंट करबा लेल दरबार मे पहुंचलाह। गांधी महाराज स टकाक संबंध मे गप करय चाहलाह, मुदा महाराज अपन आर्थिक स्थितिक हवाला द गांधी कए एकटा लिफाफा थमा देलथि। गांधीक कहब छल जे एक लाख टका स कम अहां स नहि लेब। महाराज हाथ जोड़ने रहलाह। गांधी लिफाफ खोलि देखला त ओहि मे सात लाख टकाक चेक छल। गांधी महाराजक विनम्रताक कायल भ गेलाह। केवल कांग्रेस नहि जेकरा महाराज राजेंद्र प्रसाद कए नेहरूक इच्छाक खिलाफ राष्ट्रपति बनेबा मे योगदान देबाक कारणो नेहरू महाराज स रुष्ट भेलाह। इलाहाबाद मे अमरनाथ झा स बिगड़ैत संबंध सेहो महाराज आ नेहरूक संबंध कए प्रभावित केलक। कांग्रेसक चमचागीगरीक कारण बिहारक कांग्रेसी महाराज स दूरी बनेने रहलाह। ओना राजेंद्र प्रसाद आ राधाकृष्णान महाराजक हितेषी बनल रहलाह। कहल जाइत अछि जे राजेंद्र बाबू, अमरनाथ झा आ महाराज स खउंझैल पं नेहरू क समृद्ध राज्य कए विकास कए धीमा करि कए पंजाब सन राज्य कए बढ़ावा देबाक नीतिक पाछु सेहो महाराज डॉ सर कामेश्वर सिंह आ बिहार कए कमजोर करबाक नीति छल। महाराज डॉ सर कामेश्वर सिंह जहिया तक जीवैत छलाह, हुनकर राजनीतिक कद कम नहि भेल, मुदा हुनकर गेलाक बाद दरभंगा नहि अपितु पूरा बिहार एकटा एहन नेताक कमी झेल रहल अछि जे बिहार क बाद किछु आओर सोचैत छल।

नहि भ सकल। एहि प्रकारे दरभंगाक महाराज डॉ सर कामेश्वर सिंह सबस कम बैस मे संसद मे गेलाक बाद अपन आखरी सांस तक संसद सदस्य रहबाक एकटा रिकार्ड बना चुकल छथि।

महाराज कए प्रणाम करैत राजस्थानक महारानी गायत्री देवी

...46 साल बाद

लगभग 22 फुट ऊंच इटेलियन मारवलक विशाल मूर्तिक तौर मे बैसल हम अपन आगू दरभंगाक लाल किला कए अपन अस्तित्व बचेबा लेल प्रयासरत देखि रहल छी। हमर पाछु श्मशान मे बनल माधेश्वर प्रांगण अछि, जाहि मे महाराजक बनाउल अनेक मंदिर अछि, मुदा महराजक समाधि पर आइ धरि कोनो मंदिर नहि बनि सकल। चौरंगीक चारुआत अनेक मूर्ति अछि, किछु राजाक, किछु नेताक, मुदा दू-दू टा विश्वविद्यालय जेकर जमीन पर बनल अछि, ओकर मूर्ति आइ धरि नहि लागल। मिथिला विवि आओर संस्कृत विविक बीच मे एकटा स्थान

खाली अछि। आशा अछि एहि ठाम महाराजक मूर्ति लागत। एहि रिक्त स्थानक ठीक पश्चिम मे अछि यूरोपियन गेस्ट हाउस। एहि ठाम 1934 मे गांधी रहल छलाह। मुदा आइ विश्वविद्यालयक कर्मचारिक निवास अछि। एहि गेस्ट हाउस मे दूरस्थ शिक्षाक केंद्र सेहो चलि रहल अछि। गेस्ट हाउसक ठीक उत्तर मे अछि कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय। कर्पूरी ठाकुर जखन सब विवि स लोकक नाम हटेबाक आदेश देलाह, त तत्कालीन शिक्षामंत्रीक सवाल छल जे कि संस्कृत विश्वविद्यालय स सेहो महाराजक नाम हटाउल जाए। कर्पूरी जी कहलथि जे इ त दुस्साहस होइत, महाराजक नाम दरभंगा स मिटाइब असंभव अछि। लालरंगक एहि लक्ष्मीविलास पैलेस मे स्थापित संस्कृत विवि स महाराजक नाम त नहि हटाउल गेल,मुदा दरबार हॉल सहित पूरा महल आइ विभिन्न प्रदर्शन आ आंदोलनक कारण क्षत-विक्षत भ चुकल अछि। 'आनंदबाग' मे आइ आनंद करबा लेल किछु नहि बचल अछि। दरभंगाक सबस पूरान पैलेसक ठीक पूर्व दिशा मे नरगौना पैलेस अछि। भारतक पहिल भूकंपरोधि एहि महल मे नेपाल स ल कए मैसूर तक कए राजा-महाराजा ठहरि चुकल छथि। टेनिस कोर्ट आ तरणताल स सुसज्जित एहि महलक एक-एकटा वस्तु बर्बाद भ चुकल अछि। ओना एहि महल परिसरक एकटा कोन मे महारानीक निवास स्थान अछि। जेकर आगू राजबहादुर विशेश्वर सिंहक महल अछि 'बेला पैलेस'। डाक प्रशिक्षण केंद्र रहबाक कारण बेला पैलेस एक मात्र महल अछि जे अपन अतीत कए बचा रखने अछि। बेला पैलेस स दू किमी उत्तर अछि दरभंगाक हवाई अड्डा। बिहारक एहि पैघ हवाई अड्डा पर 1962धरि दरभंगाक अपन जहाज उतरैत छल, मुदा आइ वायुसेनाक अधीन एहि हवाई पट्टी पर भैंस आ बकरी चरैत रहैत अछि। कोना कहि जे इ सब आइ स 46साल पहिने जेना छल तहिना अछि। मुदा दरभंगा काफी बदलि गेल अछि। नीक सड़क, भूमिगत नाला, अपन बिजली घर, 513 टा पोखरि आओर 14टा कंपनीक मालिकक घर, सब किछु आइ हम बिसरि गेलहुं महाराज।

F
4440
F·4440
2
PRESENTED BY

आई धरि नहि भेल हुनका स पैघ रोजगार देनिहार, देश कि विदेश स बिहार अबैत छल नौकरी केनिहार

अंक-18, साल-1, रजिस्ट्रेशन- आवेदित, स्नेह-छवि मिथिला स्कूल ऑफ आर्ट क लेल संपादक डाट वर्डप्रेस डाट काम स इंटरनेट संस्करण प्रकाशित. प्रधान समदिया : छवि झा, प्रबंध समदिया : सुषमा समदिया : कुमुद सिंह*, समाचार समदिया : प्रीतिलता मल्लिक, समदिया(दिल्ली) : गिन्नी सिंह ठाकुर, समदिया (नेपाल): ममता शंकर e_mail: esamaad@gmail.com (*खबरक चयनक लेल जिम्मेदार)